पेपर प्रस्तुति के लिए आमंत्रण :

उपरोक्त विषय एवं उप–विषयों पर विश्वविद्यालय शिक्षकों, शिक्षक अध्यापकों, स्कूल शिक्षकों, शिक्षाविदों, बुद्धिजीवियों से सेमिनार में प्रस्तुति के लिए हिंदी भाषा में आलेख आमंत्रित किया जाता है।

पेपर टंकण संबंधी निर्देश

- आलेख ए–4 साइज के कागज पर सिंगल स्पेस में कंप्यूटर टंकित हो।
- आलेख MS - Word में Unicode/Mangal फॉण्ट में टंकित होने चाहिए।
- चारों तरफ 1–1 इंच का हाशिया छोड़ा जाए।
- आलेख लगभग 2500 शब्दों तक सीमित हो।
- 12 साइज फॉण्ट का प्रयोग करें।

पेपर भेजने की अंतिम तिथि : 20 जुलाई, 2017

पेपर निम्लिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं:
foeseminarptc@gmail.com

आयोजन समिति

संयोजक
प्रो.खगेन्द्र कुमार
अध्यक्ष, शिक्षा संकाय
पटना विश्वविद्यालय, पटना

निदेशक
डॉ. ललित कुमार
प्राचार्य, पटना ट्रेनिंग कॉलेज
पटना विश्वविद्यालय, पटना

सह–निदेशक
डॉ. वीणा प्रसाद
प्राचार्य, वीमेंस ट्रेनिंग कॉलेज
पटना विश्वविद्यालय, पटना

समन्वयक
डॉ. सुधाकर प्रसाद सिंह
संयोजक, शिक्षा प्रकोष्ठ
बिहार प्रदेश भारतीय जनता पार्टी

सह–समन्वयक
डॉ. कुमार संजीव
प्रदेश अध्यक्ष
इंडियन एसोसियएशन ऑफ टीचर एजुकेटर्स
बिहार, पटना

शिक्षा संकाय
पटना विश्वविद्यालय, पटना–800004

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार

पं. दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानववाद

2 अगस्त 2017
स्थान : पटना ट्रेनिंग कॉलेज सभागार

पंजीकरण प्रपत्र

नाम :

पदनाम :

संस्थान का नाम :

पत्राचार का पता :

मोबाइल नं :

ई–मेल नं :

पेपर प्रस्तुतिकरण : हां / नहीं

पेपर का उप–विषय :

पेपर का शीर्षक :

सह–लेखक का नाम (यदि कोई हो) :

हस्ताक्षर

दिनांक :

शिक्षा संकाय
पटना विश्वविद्यालय, पटना–800004

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार

पं. दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानववाद

2 अगस्त 2017
स्थान : पटना ट्रेनिंग कॉलेज सभागार

आयोजक :
शिक्षा संकाय
पटना विश्वविद्यालय, पटना–800004

सेमिनार परिचय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक महान राजनितिक, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक चिंतक थे। उन्होंने एकात्म मानववाद का दर्शन दिया। उनके इस दर्शन ने समाज को एक दिशा दी। वे मानव को विभाजित करके देखने के पक्षधर नहीं थे बल्कि मानवीय समग्रता के पक्षधर थे। वे मानव मात्र का हर उस दृष्टि से मूल्यांकन करने की बात करते हैं, जो उसके संपूर्ण जीवनकाल में छोटी अथवा बड़ी जरुरत के रुप में संबंध रखता है। वे समाजवाद और साम्यवाद को कागजी और अव्यवहारिक सिद्धान्त के रुप में देखते थे। उनका मानना था कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में ऐसे विचार न तो भारतीयता के अनुरुप है और न ही व्यवहारिक ही। भारत को चलाने के लिए भारतीय दर्शन ही कारगर वैचारिक उपकरण हो सकता है। पूंजीवाद ने मानव को एक आर्थिक इकाई माना और समाज से संबंधों को एक अनुबंध से ज्यादा कुछ नहीं समझा, साम्यवाद ने व्यक्ति को मात्र एक राजनीतिक और कार्मिक इकाई माना। साम्यवाद के प्रर्वतक मार्क्स ने मानव समाज को एक विखंडित आपसी संबंधविहीन भीड़ की तरह देखा जिसमें वर्ग अपना आधिपत्य जमाने के लिए स्वार्थ पूर्ण नियम और प्रथाओं को लागू करता है। समाजवाद में व्यक्ति को एकांगी माना गया है। मूलतः पश्चिम की सभी विचारधाराएँ संकेन्द्रित है हालांकि व्यक्ति उन सबके मूल में है, लेकिन उससे कुछ परे हटकर परिवार समुदाय और राज्य है, जो पश्चिमी विचारकों के अनुसार एक दूसरे से अलग है।

उनका मानना था कि पश्चिमी राजनीति अभी भी राष्ट्रीयता, प्रजातंत्र, समता या समाजवाद के आदर्शों को मानकर चल रही है। विश्व एकता की कल्पना और विश्व शांति के लिए प्रयास के कारण ही 'लीग ऑफ नेशंस' तथा दूसरे विश्वयुद्ध के बाद 'संयुक्त राष्ट्र संघ' का जन्म हुआ। वास्तव में ये सभी एजेंसियां समस्याओं को सुलझाने की बजाय दूसरी समस्याओं को जन्म देने वाली साबित हुई। एक देश की राष्ट्रीयता, दूसरे देशों की राष्ट्रीयता से टकराकर उनके लिए घातक बन जाती हैं. विश्व शांति को नष्ट करती है। वैश्विक एकता और राष्ट्रीयता के बीच अक्सरहां टकराव होता है। इन दोनों के बीच तालमेल कैसे बैठाया जाय? इस तरह की समस्या प्रजातंत्र और समाजवाद के बीच भी उपस्थित होती है। प्रजातंत्र में व्यक्ति स्वतंत्र तो है लेकिन उसका विकास पूंजीवादी व्यवस्था के साथ केन्द्रीकरण के साधन के रुप में होता है।

आज राष्ट्रीय एवं मानवीय दृष्टिकोण से आवश्यक हो गया है कि हम भारतीय संस्कृति के तत्वों पर विचार करें। भारतीय संस्कृति की विशेषता यह रही है कि वह संपूर्ण जीवन का, संपूर्ण सृष्टि का, संकलित विचार करती है। विविधता में एकता का, विविध रुपों में व्यक्तिकरण ही भारतीय संस्कृति का केंद्र है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति एकात्मवादी है। टुकड़ों–टुकड़ों में विचार करना विशेषज्ञ की दृष्टि से ठीक हो सकता है, लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं है। पश्चिमी सभ्यता का मुख्य कारण उनका जीवन के संबंध में टुकड़ों–टुकड़ों में विचार तथा फिर उन सबको थेकली लगाकर जोड़ने का प्रयास होता है। पश्चिमी दार्शनिक द्वैत सिद्धांत तक पहुंचे। हीगेल ने 'थिसिस, एण्टीथीसिस तथा सिन्थेसिस' का सिद्धान्त रखा। इसी आधार पर कार्ल मार्क्स ने समाज का अर्थशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया। डार्विन ने 'मतस्य न्याय' को जीवन का आधार माना। किन्तु हमने संपूर्ण जीवन में मूलभूत एकता का दर्शन किया। जो द्वैतवादी रहे, उन्होनें भी प्रकृति और पुरुष को एक–दूसरे का विरोधी अथवा परस्पर संघर्षशील न मानकर पूरक ही माना है। जीवन की विविधता अन्तर्भूत एकता का अविष्कार है और इसलिए उनमें परस्परानुकूलता तथा परस्पर पूरकता है। विविधता में एकता अथवा एकता का विविध रुपों में व्यक्तिकरण ही भारतीय संस्कृति का मूल विचार है। यही कारण है कि संस्कृति की स्वतंत्रता परमावश्यक है, क्योंकि इसके बिना राष्ट्र की स्वतंत्रता निरर्थक है। उनका विचार था कि यदि इस तथ्य को हमने हृदयंगम कर लिया तो फिर विभिन्न सत्ताओं के बीच संघर्ष नहीं रहेगा। यदि संघर्ष है तो वह प्रकृति का अथवा संस्कृति का द्योतक नहीं, विकृति का द्योतक है। अर्थात जिस मतस्य न्याय का जीवन संघर्ष को पश्चिमी देशों के लोगों ने ढूंढकर निकाला उसका ज्ञान हमारे दार्शनिकों को था। मानव जीवन में काम, क्रोध आदि विकारों को भी हमने स्वीकार किया है। किन्तु इन सब प्रवृतियों को अपनी संस्कृति का आधार नहीं बनाया। जिसकी लाठी उसकी भैंस वास्तव में जंगल का कानून है। मानव की सभ्यता का विकास इस कानून को मानकर नहीं बल्कि यह कानून न चल पाये इस व्यवस्था के कारण ही हुआ है। आगे भी बढ़ना हो तो हमें इस इतिहास को ध्यान में रखकर ही चलना होगा।

पूरे विश्व में आज जो भी समस्या है उसके जड़ में मानव और प्रकृति के संबंध को खण्ड–खण्ड में देखना और उस अनुरूप सामाजिक तानाबाना गढ़ने की कोशिश करना। एकात्म मानववाद की अवधारणा जो मानव की अच्छाईयों की मूलभूत एकता में विश्वास करती है। विभिन्न धर्मो के बीच नफरत और हिंसा को रोकने का एक उपाय हो सकता है। आर्थिक, सामाजिक या राजनितिक कोई भी क्षेत्र क्यों न हो "एकात्म मानववाद" इन सारे क्षेत्रों में उत्पन्न समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। क्योंकि "एकात्म मानववाद" में व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र और फिर मानव और चराचर सृष्टि का विचार किया गया है। एकात्म मानववाद, इन सब इकाईयों में अन्तर्निहित परस्पर पूरक संबंध देखता है। भारतीय चिंतन जिस तरह से सृष्टि और समष्टि को समग्र रूप में देखता है, वैसे ही पंडित दीनदयाल जी ने मानव, समाज और प्रकृति व उसके संबंध को समग्र रूप में देखा। मनुष्य को एकात्म मानव–दर्शन में तन–मन–बुद्धि और आत्मा का सम्मिलित स्वरूप माना गया। मानव की यह समग्रता ही उसे समाज के लिए उपयुक्त और उपादेय बनाती है। भारतीय चिंतन द्वारा प्रतिपादित धर्म, अर्थ और काम के प्रतीकों के रूप में मानव आत्मा को मोक्ष की ओर प्रवृत्त करने वाला विधि ही "एकात्म मानववाद" में समाविष्ट है। समग्र मानव को निर्मित करने वाले इन चार तत्वों में "एकात्म" अपेक्षित है, क्योंकि यह एकात्मता मानव को कर्मठता की ओर प्रेरित कर उद्यमी बना सकती है, जिस समाज का हित–संवर्धन संभव है। इस प्रकार वर्तमान वैश्विक एवं राष्ट्रीय संदर्भ में जो भी समस्याऐं हैं सबका निदान पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की अवधारणा में निहित है। इसलिए आज के संदर्भ में इस विचार की प्रासांगिकता बढ़ गई है।

उप–विषय

1. पं. दीनदयाल उपाध्याय का जीवन दर्शन
2. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता
3. आर्थिक संरचना की वैश्विक व्यवस्था और एकात्म मानववाद
4. पूंजीवाद : मनुष्य, प्रकृति एवं समाज के सन्दर्भ में पं. दीनदयाल उपाध्याय की भूमिका
5. साम्यवादी अर्थव्यवस्था की विफलता एवं एकात्म मानववाद में समाधान
6. एकात्म मानववाद : वैश्विक आर्थिक संरचना एक मात्र विकल्प
7. एकात्म मानववाद एवं भारत की आर्थिक एवं औद्योगिक नीति
8. कट्टरपंथ एवं एकात्म मानववाद
9. विज्ञान एवं एकात्म मानववाद
10. विश्व एवं भारत का शैक्षिक परिदृश्य एवं एकात्म मानववाद